

ॐ आँ कर्षणी विकर्षणी स्वमुख  
चाहा ते लंडं इंद्रिय मुखे दत्ता वार  
मंत्रे पठनीयं स्त्री वंश्या भवति ॥  
१८ ॥ ॐ नमो काली यो ह करका  
लीराति राति जेइ सा सुर पठावु  
आधीराति जिहां कपठावुं तिहं  
लाइ बैठी हुइ तउ ले उठाय सती  
हुइ लज ले बैठाइ पीसती ते  
इत उघरटी फाउइ कातती हि  
तउ अरहटी यो तोडइ पाछी  
आली धडोला फाउइ बैठी ज  
नक नउ जीजक किर किर देष इ  
पारा मुक ग्रह लंडं मरी सद्य फु  
श्वरो वाचु अकालांतर

(५४) ६  
स्य तेषां शनिघातं वत् प्रतिदिनं त्रि  
संध्यं सायः वारं २० धूपोद्धारपुर  
स्कारेण बहिर्भूमि गमनं अशनं  
चरणाक्रियो दोदिन ७ यावत् तोय  
संस्तुतौ न विद्येयः दृष्टपूर्वोऽयं मं  
त्रः सायः ॥ १७ ॥ ॐ नमोस्तुता  
रे असुक्ते मेव यामानयस्वाहा  
दिन ७ लपिजे वन्य होइ ॥ १८ ॥  
ॐ क्लीं कायकरस्य रत्नो परे स्वस्  
ॐ नमः शरीरि हि चो सठियो गौणी  
की मुदा जाती प्रेष्य ६४ श्री षंड समं  
घृथ होम्यते कोपो शाम्यति ॥ १९ ॥  
एरंड फलं निवर्तित्वा तेन स्त्रेहं नव  
र्तितं मभ्यस्य केहो लंपोसं चक्षुरंजमं  
नेत्रं भर्तुं वपुः ॥ २० ॥

ॐ प्रणी नु वस्त्र १ मोचिणी नु वस्त्र  
 धात्रिणी नु वस्त्र ३ नाचिणी नु वस्त्र  
 लोहारिणी नो वस्त्र ५ रौ वास्त्र नु वस्त्र  
 कांचली ७ एसातनी दिवटी की नु वस्त्र  
 लदिकुडवाली यडती पाइ अउर  
 श्रीवशीधर ॥ २९ ॥ घट यल नु वस्त्र  
 नात्तण १० ॥ ११ ॥ घट यल नु वस्त्र  
 अंखल नाध १२ ॥ १३ ॥ मोची ना  
 धर नात्तण १४ ॥ १५ ॥ नाचिणी नाधर ना  
 त्तण १६ ॥ १७ ॥ लली कुमा नु वस्त्र  
 लत्रउवांटी यड दिवा १८ ॥ १९ ॥ अंज  
 न पाडी यड वशी करघी विधि ज  
 णीवी अंज न विधि ॥ २० ॥ २१ ॥ अं का  
 रणी कामाक्षी देवी कामापुरा काम

(2)A

ॐ कामं रुपिणी वशी करणी अ  
इको मम वश्यं कुरु स्वाहा ॥ दिन ३  
वशी भवति ॥ २३ ॥ पुष्पा के इ घोडा  
ना ॥ डावान पले इ १ ते घोडा नमुडा  
वी कान नउ मल ले इ २ आपणा डा  
वा अगुडा ना ले ही म मोली क  
ने स्त्री न इ अ वा प स प न इ प द म  
ही म इ सो व र य व इ स त्या ॥ २४ ॥  
ॐ न मो न म व त ना म द ना य द  
दी क्ली कूं वूं असु की म म व श मा न  
य २ स्वाहा ॥ वार ७ दिन प्रति जाय की  
न इ व श्या भवति ॥ २५ ॥ ॐ उ उ उ  
अ रा य स्त्री णा म द पा त य पा त य स्वा  
॥ वार १० स्त्री णा तो डा व कः ॥ २६ ॥

ॐ नमो रक्त  
कौमुदे अमुकी दा वय २ अमुकी म  
पातय २ स्वाहा मंगल की राति १  
रक्त वस्त्र पहिरी रक्त माला गुग्गु  
लेधूप ॥ ३ ५ ककुवल्ली ॥ ॐ द्रु  
राय लक्ष्मी स्वाहा १० प्रति मागे  
तु पो दे य रात्रा स्वप्न सर्व कथय  
१॥ ॐ नमो रक्त वली कर्ण  
पे रा चि का दे की अमो घ नागी  
धरा सत्य वादिनी सत्य दर्शय  
दर्शय सप्त समुद्रा न्यंतर या कधि  
वार्ता तां मम कर्णे कथय कथय  
॥ नमः ॥ पूर्व सेवा सह १० जाप  
गुग्गुलिका पंचा म् सहो मः व

क. कुनाय २ (गुगुलुगोली) १  
टहीत्वा प्रायते शुनो शुनं कथ  
ति निश्चित ॥ २ ॥ अथ घृत वृद्धि क  
माय ॥ ३ ॥ अंजिए अपराजिए अण  
ह ए महा बले लोग साले लोग सा  
गरेठः ठः स्वाहा चीठी लिखी विली  
राइ बांधी यड घृत के रोमंत्रः ॥  
३ ॥ स्वेता पराजिते या मूलें स्वे  
कं टारिका मूलें च गृहीतार स  
क पासे न वीतें निर्माया विप  
रीत च क्रोडूसरा वन्यस्य एक वणा  
त घृते न क जल पात न क्रियते विप  
रीत च क्रोडू व मेव विधानं दीयते प  
त्रो मोने न पुष्पा के विदधाति तल  
यश्च रंजनं विधाय यत्र यत्र गम्यते त  
त्र कोपि ना बलौ क्रियति ॥ २ ॥

ॐ नमो आदि चंगी तिषा इ आणिल  
पा षं डी या ~~रू~~ण प्रथम वी न इ त्रि पु ष  
शु प नू लू पा न ल रे उं त उं म धा ला  
रू गा र दे उं त उं ब क्षा ला म इ न इ ति  
ने उं त उं पा ड ला ग इ पु रु ष दे उं त  
इ प्र स्त्री ला ग र अ स्त्री इ उं त उं पु रु ष  
डा ग इ ज उं मा ह र उं दी ध उं लू पा न  
डा ग इ नो लू ए व च मारी कि शा न  
र उं व न इ श र वा च ॥ पु रु ष स्त्री  
दु व व र य से व ज न व र य प्र थ म ल  
से ह ना हा ध नू मां गी ली ज इ जे  
इ व स्य करी वा ही डी य इ ते ह न  
इ मं न सुं वार ~~रू~~ आ दि स्य वा ग

पुरुषनामअथस्त्रीनामकुटुम्ब  
वर्णनीअमुकाअमुकीवश्यंभव  
तुमंत्रीयइषडइल्लगाओमवी  
स्त्रीऋतुमाहिराषडपोटलोदिन  
उषडइल्लगायायाशुषकरीवाह  
वार२१मंत्रीअआदिमइंदी  
इअथदधितकमध्ययंस  
सनवश्यं॥ॐकोमदु  
गडलितामुंदीवडउपारिपित  
दीहायाहिवालीमुंदीवारिचिह्नकी  
मुंदीवारिक्कीयामुंदीहोथउकोईन  
धिअकोनउईसकोगुरुहोमंत्रिदु  
तकातियडावसिकरीलेउफुरहा  
याचमारीकेचमारीकी



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com